मोहनदास नैमिशराय जी के उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबंध की रुपरेखा

शोधकर्ता

सिध्दार्थ वाल्मीक गाढे

(एम.ए.,बी.एड.,एम.लिब.)

शोध-निर्देशक

डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड

शोध निर्देशक, प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,

श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी.

ता. जि. परभणी (महाराष्ट्र)

२०२१

प्रस्तावना :

मनुष्य के मन के अंदर जिज्ञासा के कारण अनुसंधान की चाह उत्पन्न होती है। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। हिन्दी साहित्य भी इस प्रक्रिया का अंग है। साहित्य जगत में भी अनुसंधान का कार्य निरंतर हो रहा है। उसमें छुपे अज्ञात तत्वों की खोज करना ही अनुसंधान करना है।

उपन्यास आधुनिक युग का विशिष्ट सहित्यांग है। पुरुष और नारी के जीवन की विविध समस्याओं का उद्‌घाटन तथा उनका समाधान, आज के उपन्यासों का प्रधान कार्य है। उपन्यासकार एक सामाजिक प्राणी होता है। वह जीवन की विविध समस्याओं और परिस्थितियों से प्रभावित होकर अपनी रचनाओं में उस प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

आज के उपन्यासों का उद्देश्य मात्र मनोरंजन न मानकर मानव जीवन की अभिव्यक्ति माना गया है। मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास इसी कोटी में आते हैं। जो चरित्रप्रधान मनोवैज्ञानिक उपन्यास के रूप में उभरकर आते हैं। इसे कथानक में सशक्त और प्रखर रूप से प्रस्तुत किया गया है। मोहनदास नैमिशराय ने जीवन को गहराई के साथ देखकर अनुभव किया कि वे पीड़ा, वेदना और दु:ख अच्छी तरह से समझ सकते हैं। नारी की मानसिकता से वह अच्छी तरह से परिचित है।

नारीवादी आंदोलनों ने नारी के स्वतंत्र अस्तित्व और उनकी मुक्ति को पुरुष से मुक्ति तक सिमित कर दिया। जबकि नारी-मुक्ति का वास्तविक अर्थ 'पुरुष' से नहीं, उस व्यवस्था से मुक्ति पाना है जिसके तहत नारी मन, शरीर और चेतना के स्तर पर आजादी पा सके। मोहनदास नैमिशराय ने भी हमारे समाज में नारी के जो रूप देखे उन्हें तो रूपायित किया ही, साथ ही साथ भारत की भावी नारी का रूप क्या हो? उसका चित्रण भी अपने उपन्यासों में किया। आज रचना प्रक्रिया में आगे चलते हुए उनकी नारी के प्रति मानसिकता में काफी कुछ परिवर्तन आया और नयी दृष्टि से आज की नारी के संघर्षशील

जीवन की मीमांसा में प्रवृत्त हुई है। उनके उपन्यास में यह भी स्पष्ट होता है कि, समाज का बनता बिछड़ता स्वरूप किस प्रकार नारी को प्रभावित करता है। साथ ही साथ उनके उपन्यासों में नारी संवेदना भी गहराई से चित्रित हुई है।

विषय चयन एवं प्रेरणा :

आधुनिक काल में हम ऐसे शब्द नारी विमर्श, नारी मुक्ति, नारी अधिकारवाद जैसे सुनते हैं, इन शब्दों के आधार पर यही दिखाई देता है कि, कहीं कुछ गड़बड़ है, अन्याय है। बहुत बेचैनी का भाव है जो फुट पड़ना चाहता है। इसी कारण मेरे मन में नारी संवेदना के बारे में और भी जानने की जिज्ञासा निर्माण हुई। इससे यह भी मालूम होता गया कि नारी साहित्य में विद्रोह एवं सामाजिक जीवन की पीड़ा है। इसी कारण नारी संवेदना का अध्ययन करने की जिज्ञासा और भी बढ़ती गई।

हिंदी साहित्य में नारी जीवन का चित्रण किस तरह से हुआ है? चित्रण कितना वास्तविक है? नारी साहित्य में विद्रोह का स्वरूप कैसा है? साहित्य में पीड़ित नारी का चित्रण किस तरह से हुआ है? आदि सवालों ने इस विषय पर मुझे कार्य करने की प्रेरणा दी? इस कारण मैंने हिंदी के विख्यात साहित्यकार 'मोहनदास नैमिशराय जी के उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना' इस विषय का चयन प्रस्तुत शोध कार्य के लिए किया है।

शोध विषय का महत्व :

नारी साहित्य के तमाम पहलुओं को देखने के बाद यही दिखाई देता है कि, नारी को जो अधिकार प्राप्त है, उनसे वह आज भी बहुत दूर है। इन अधिकारों को प्राप्त करने के लिए वह आज भी संघर्ष कर रही है। इतना आधुनिक समाज होने के बावजूद भी पुरुष परंपरागत अपेक्षाओं के कारण नारी के शारीरिक सुंदरता के प्रति अपना नजरिया ही नहीं बदलता। इसी कारण साहित्य, पत्र-पत्रिकाएं, फिल्में, इंटरनेट को रोमानी रूप में प्रकट किया जा रहा है।

वास्तविक रूप में नारी-विमर्श, नारी जीवन और उससे जुड़े तमाम प्रश्नों की चर्चा तथा उनके जीवन में लोकतंत्रता लाने का प्रशंसनीय कार्य ही है। अब नारी अपने जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं के साथ विमर्श करने की तैयारी में हैं। आज नारी जीवन का चिंतन, विवेचन, विश्लेषण अनुसंधान का विषय है। उनमें स्थित संवेदना आज भी महत्वपूर्ण है, इस दृष्टि से यह विषय महत्वपूर्ण है।

शोध विषय का उद्देश्य :

साहित्यकार समाज प्रबोधन के साथ-साथ सामाजिक जागरण भी करता है। साहित्य में नारी जीवन का चित्रण इसका प्रमाण है। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में नारी-विमर्श एक मील का पत्थर है, इसे बल देने का काम नैमिशराय जी ने किया है, जिसे स्पष्ट करना इस शोध कार्य का उद्देश्य है।

आज नारी सबल, सक्षम और समर्थ बनकर सभी क्षेत्रों में योगदान दे रही है परंतु इसकी मात्रा अल्प है। फिर भी ऐसे जागृत नारी का विकासात्मक रूप साहित्य में चित्रित हुआ है, उस पर प्रकाश डालना और समाज के सामने प्रस्तुत करना इस शोध कार्य का उद्देश्य है। नारी शोषण का शिकार हुई है। इसका विस्तृत चित्रण साहित्य में हुआ है। नैमिशराय जी ने अपने सभी उपन्यासों में इसका चित्रण किया है। सामाजिक चेतना की दृष्टि से यह कार्य महत्वपूर्ण है। इसे स्पष्ट करना इस शोध कार्य का उद्देश्य है।

समाज सुधारकों का कार्य, सरकार की सुधारवादी नीति, महिला आरक्षण, समाजसेवी संगठन तथा शिक्षा समस्याओं का योगदान आदि कारणों से नारी जागृत एवं चेतित हुई। परिवर्तित नारी जीवन और नारी जीवन में उत्पन्न संवेदना का चित्रण किस प्रकार हुआ, उसे दर्शाना प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य है।

प्राक्कल्पना / पूर्वानुमान :

कोई भी कार्य शुरू करने से पहले मन में कल्पना करके ही व्यक्ति काम को शुरू करता है। अर्थात किसी भी कार्य के प्रारंभ की पहली शर्त कल्पना या पूर्वानुमान है। उससे ही प्राक्कल्पना के कारण अनुसंधान के कार्य को निश्चित दिशा मिलती है। मेरे द्वारा अपने शोध कार्य के लिए निम्न प्राक्कल्पना को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाएगा-

- मोहनदास नैमिशराय ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है।
- मोहनदास नैमिशराय एक संवेदनशील रचनाकार है। नारी संवेदना का चित्रण उनके उपन्यास साहित्य में हुआ है।
- मोहनदास नैमिशराय का साहित्य वास्तविक जीवन से जुड़ा हुआ है। नारी जीवन की वास्तविक घटनाएं एवं संवेदना उनके साहित्य में दिखाई देती है।
- मोहनदास नैमिशराय के साहित्य में नारी जीवन से जुड़ी समस्याओं के साथ संघर्षशील नारी का चित्रण हुआ है।
- मोहनदास नैमिशराय जी अपने साहित्य के माध्यम से नारी जीवन को, समाज जीवन को नई दिशा देने का काम करते हैं।
- मोहनदास नैमिशराय जी साहित्य के क्षेत्र में नए आयाम खोलते हैं।
- अपने साहित्य के माध्यम से नारी जीवन के चित्र को नैमिशराय जी ने जीवंत रूप में चित्रित किया है।
- मोहनदास नैमिशराय जी ने ठोस यथार्थता के साथ, बेबाक पद्धति से जो देखा, जो अनुभव किया उसे प्रस्तुत किया है।
- मोहनदास नैमिशराय जी हाशिए पर खड़ी नारी का चित्रण करते हैं।

- मोहनदास नैमिशराय जी के उपन्यास साहित्य का नारी संवेदनात्मक अध्ययन इसमें अपेक्षित है।

हर शोध-विषय की अपनी सीमा निश्चित होती है। शोध कार्य सुचारू ढंग से संपन्न होने के लिए प्रस्तुत विषय को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय : मोहनदास नैमिशराय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

द्वितीय अध्याय : नारी शब्द की उत्पत्ति, अर्थ एवं विभिन्न रूप :-

तृतीय अध्याय : मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों की कथावस्तु :-

चतुर्थ अध्याय: समकालीन उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना :-

पंचम अध्याय : मोहनदास नैमिशराय जी के उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना :-

षष्टम अध्याय : उपसंहार :-

प्रथम अध्याय : मोहनदास नैमिशराय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

मोहनदास नैमिशराय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्वरूप स्पष्ट करते हुए मोहनदास नैमिशराय का जीवन परिचय जन्म, बचपन, माता-पिता, भाई-बहन, परिवार, उनकी आदतें आदि का विस्तृत विवेचन किया जाएगा। साथ ही साथ उपन्यासकार से नाटककार, कथाकार, निबंधकार नैमिशराय तक अध्ययन करते हुए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के साहित्य के अध्येता नैमिशराय आदि रूपों पर विचार किया जाएगा। उनको प्राप्त पुरस्कारों की सूची भी दी जाएगी। अंत में निष्कर्ष दिए जाएंगे।

द्वितीय अध्याय : नारी शब्द की उत्पत्ति, अर्थ एवं विभिन्न रूप :-

इस अध्याय में नारी शब्द की उत्पत्ति, उसका अर्थ और नारी के विभिन्न रूप इन पर दीर्घ संशोधन करने का प्रयास किया जाएगा। सृष्टि के आदिकाल से नारी की उत्पत्ति के संबंध

में विभिन्न प्रकार के मत रहे हैं। साधारण नारी शब्द का प्रयोग मादा, स्त्री, महिला, बाई, लेडी, वूमेन, फीमेल के रूप में लिया जाता है।

नारी शब्द के अर्थ के संदर्भ में कहा जाए तो नारी को स्त्री, शोषित, अबला, ललना, सुंदरी, रमणी, रमा, कोपना, भोगिनी, पत्नी, पतिव्रता आदि शब्द मिलते हैं। इन सभी शब्दों को और उनके अर्थों को इस अध्याय में चिकित्सक रूप से देखा एवं परखा जाएगा।

आज के वर्तमान समाज में नारी के विभिन्न रूप हमारे सामने दिखाई देते हैं। जैसे नारी का प्राकृतिक रूप, मानवीय रूप, सामाजिक रूप, पत्नी रूप, बच्ची, बेटी, बहन, प्रेमिका, मां, सास, बहू, विधवा, वेश्या और इसके अतिरिक्त उसका परिवारेत्तर रूप आदि। इन सभी नारी के विभिन्न रूपों को इस अध्याय में सटीक रूप से स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा।

तृतीय अध्याय : मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों की कथावस्तु :-

इस अध्याय में मोहनदास नैमिशराय के छ: उपन्यासों पर प्रकाश डाला जाएगा। उन्होंने अब तक कुल छह उपन्यास लिखे हैं। वे इस प्रकार हैं–

- क्या मुझे खरीदोगे ? (१९९०)
- मुक्ति पर्व (१९९९)
- वीरांगना झलकारी बाई (२००३)
- आज बाजार बंद है (२००४)
- ज़ख्म हमारे (२०११)
- महानायक बाबासाहब डॉ. आंबेडकर (२०१२)

क्या मुझे खरीदोगे ?

मोहनदास नैमिशराय जी का यह प्रथम उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने महानगरीय मुंबई में भटकती हुई महिलाओं की त्रासदी का चित्रण प्रस्तुत किया है।

मुक्ति पर्व

प्रस्तुत उपन्यास दलित समाज को केंद्र में रखकर लिखा गया है। जिसमें दलित समाज की आजादी के पहले की स्थिति और बाद में हुए परिवर्तन का चित्रण किया गया है।

वीरांगना झलकारी बाई

नैमिशराय जी का यह ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास के लिए उन्हें 'हिंदी अकादमी दिल्ली' से पुरस्कार मिला है। यह उपन्यास रानी लक्ष्मीबाई को सहयोग देनेवाली उनकी हमशक्ल झलकारी बाई के बारे में है।

आज बाजार बंद है

प्रस्तुत उपन्यास देवदासियों और वेश्याओं के जीवन संघर्ष को अभिव्यक्त करता है। वेश्या व्यवसाय में फंसी औरतों को भयानक यातनाओं का सामना करना पड़ता है। नैमिशराय जी का वेश्यावृत्ति को लेकर लिखा हुआ उपन्यास एक सफल प्रयास साबित हुआ है।

ज़ख्म हमारे

यह उपन्यास अति संवेदनशील होने के साथ-साथ समकालीन इतिहास का एक मार्मिक दस्तावेज भी है। इसके माध्यम से लेखक ने गुजरात के सांप्रदायिक तांडव के बारीक विवरण को स्पष्ट किया है। यह उपन्यास पाठकों की संवेदना जागृत करता है।

महानायक बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर

आधुनिक भारत के महानायक डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के जीवन संघर्ष पर आधारित यह उपन्यास है। लेखक ने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के जीवन एवं उनके

परिवार की सामाजिक परिस्थितियों के साथ महार जाति के गौरवशाली इतिहास से हमें रूबरू कराया है।

चतुर्थ अध्याय: समकालीन उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना :-

मोहनदास नैमिशराय जी के उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना का चिंतन करते समय हमें उनके समकालीन उपन्यासकारों के उपन्यासों का भी चिंतन मनन करना आवश्यक हैं। इसमें महिला उपन्यासकार और पुरुष उपन्यासकार दोनों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। समकालीन उपन्यासकारों तथा उनके उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना का विमर्श हम इस अध्याय में करेंगे। इसमें कृष्णा सोबती का मित्रोमरजानी, राजेंद्र यादव का औरों के बहाने, अरविंद जैन का औरत और अस्मिता, ममता कालिया का बेघर, चंद्रकला त्रिपाठी का उनकी जन्नत की हकीकत, मनु भंडारी का आपका बंटी, मृदुला गर्ग का कठगुलाब, मैत्रेय पुष्पा का चाक, चित्रा मुद्गल का एक जमीन अपनी, सूर्यबाला का अग्निपंख आदि प्रमुख उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना पर प्रकाश डालेंगे।

पंचम अध्याय : मोहनदास नैमिशराय जी के उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना :-

वर्तमान समय में भी नारी पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं है। इसका कारण पुरुषों की संकुचित एवं स्वार्थी मनोवृति है। नैमिशराय जी नारी की असहायता पर करुणा विगलित थे और मिथ्या प्रदर्शन पर चिंतित थे। उनका ह्रदय नारी के प्रति सच्ची सहानुभूति से भरा था। इसमें नारी-जीवन की निरीह विवशता का क्रंदन भी है और उसे सुधारने का जागरूक प्रयास भी।

नैमिशराय जी ने नारी जीवन के प्रत्येक पहलुओं को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। तथा नारी जीवन से संबंधित विविध प्रकार की समस्याओं को प्रस्तुत करके नारी को सचेत

करने की चेष्टा भी की है। उन्होंने समाज के नारी प्रति दोगले पन से नकाब उतारने का प्रयास किया है और नारी जीवन की कड़वी सच्चाई को प्रस्तुत करने के लिए उनकी पीड़ा, उनके दु:ख-दर्द, उनकी कुंठाग्रस्त स्थिति आदि को अपने उपन्यासों में विशेष रूप से स्थान दिया है।

षष्टम अध्याय : उपसंहार :-

उपसंहार में शोध प्रबंध के सभी अध्यायों को निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। शोध विषय के आधार पर मूल्यांकन कर सार को प्रस्तुत किया जाएगा।

शोध प्रबंध के अंत में 'परिशिष्ट' में संदर्भ सूची के अंतर्गत मूल ग्रंथ सूची, सहायक ग्रंथ सूची, कोष ग्रंथ सूची, पत्र-पत्रिकाएं आदि की सूची होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१) आधुनिकता: स्त्री-विमर्श- ललिता एन.राठोड, समता प्रकाशन कानपुर देहात– प्रथम संस्करण २०१४

२) मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में विद्रोह – प्रा.विधाते विकास कुंडलिक, ए.बी.यस. पब्लिकेशन वाराणसी - प्रथम संस्करण २०१३

३) क्या मुझे खरीदोगे ?- मोहनदास नैमिशराय, अमीबा प्रकाशन नई दिल्ली - प्रथम संस्करण १९९०

४) मुक्ति पर्व – मोहनदास नैमिशराय, प्रवीण प्रकाशन नई दिल्ली - प्रथम संस्करण १९९९

५) वीरांगना झलकारी बाई – मोहनदास नैमिशराय, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली - प्रथम संस्करण २००३

६) आज बाजार बंद है – मोहनदास नैमिशराय, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली - प्रथम संस्करण २००४
७) ज़ख्म हमारे – मोहनदास नैमिशराय, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली - प्रथम संस्करण २०११
८) महानायक बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर - मोहनदार नैमिशराय, धम्म ज्योति चैरिटेबल स्ट्रस्ट, दिल्ली- २०१२

शोध-निर्देशक **शोधकर्ता**

डॉ.शेषेराव लिंबाजी राठोड — सिद्धार्थ वाल्मीक गाढे

शोध निर्देशक, प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष — (एम.ए.,बी.एड.,एम.लिब.)

श्री शिवाजी महाविद्यालय,परभणी.

ता.जि.परभणी (महाराष्ट्र)